मरने के बाद भी देश के काम आएगी महिला बटालियन

सीआरपीएफ की 88 महिला बटालियन ने महिला दिवस पर किया एम्स में देहदान

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली।

देश की पहली सबसे बड़ी महिला बटालियन बनने का गर्व हासिल करने के बाद सीआरपीएफ की 800 महिला जवान ने विश्व महिला दिवस पर देहदान कर मिसाल कायम की। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञाल संस्थान के आरबो में देहदान कर महिला जवानों ने मरने के बाद भी देश के काम आने की प्रतिज्ञा ली। सीआरपीएफ जवानों के देहदान के बाद आरबो में में अब तक किए गए कुल अंगदान की संख्या 13,500 हो गई है।

सीआरपीएफ (सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स) की 88 महिला बटानियन की कमांडेट नीतू डी भट्टाचार्या ने कहा कि 1986 में गठित हुई बटालियन ने राजीव गांधी के महिला सशक्तिकरण के सपने को पूरा करने के लिए सामूहिक अंगदान की शपथ राष्ट्पति प्रतिभा पाटिल के सामने ली गई।

राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ परेड के बाद बटालियन की उपस्थित जवान एम्स पहुंची। कमांडेंट नीतू ने भी इस क्रम में अपनी आंखें दान की। महिला कमांडेंट ने बताया कि देहदान के जरिए मरने के बाद भी देश के काम आने की भावना को जीवित रखा जाएगा। आरबो (ऑर्गन रिट्राइवल बैंकिग आर्केनीइजेशनश) की प्रमख डां आरती विज ने बताया कि गदान के एम्स लंबे समय से प्रचार अभीयान चला रहा है। महिला दिवस पर कुछ अलग करने के लिए सीआरपीएफ की 88 महिला बटालियन ने संस्थान में स्वेच्छा अनुसार देहदान के लिए पंजीकरण किया, जिसमें किसी ने अपनी आंखे, किसी ने दिल व किसी ने मरने के बाद किडनी दान करने की इच्छा जाहिर की। डां आरती ने बबताया कि मस्तिष्क मृत हेने के बाद किसी भी व्यक्ति की आंख को छौड़ कर कोई भी अंग 24 गंटे के भीतर दूसरे व्यक्ति में स्यारोपित किया जा सकता है। अंगदान अभियान में 88 महिला बटालियन के बाद सीआरपीएफ की अन्य दो महिला बटालियन 135 और 213 को भी जोड़ा जाएगा।